

MT EDUCARE LTD.

ICSE X

SUBJECT : **HINDI**

BOARD PAPER – 2015

ANSWERSHEET

(खण्ड 'क')

A.1

1)

“विश्वासपात्र मित्र जीवन की एक औषध है।”

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। अतः सामाजिक प्राणी होने के नाते मनुष्य सभी के साथ मिल-जुलकर समूह में रहना पसन्द करता है। ये व्यक्ति एक-दूसरे के रिश्तेदार या सम्बन्धी नहीं होते हैं। ऐसे सम्बन्धों को मित्रता की संज्ञा दी गयी है। मित्रता से जैसा सुख और आनन्द मिलता है वैसा आनन्द संसार की किसी अन्य वस्तु से नहीं मिलता है। अच्छी मित्रता के अभाव में जीवन नीरस हो जाता है। इसलिए मानव जीवन में मित्रता की बहुत उपयोगिता है। जिस प्रकार धर्म और विवेक मनुष्य को पाप से बचाते हैं, उसी प्रकार एक विश्वासपात्र मित्र अपने मित्र को संकट के समय बचाता है। एक सच्चा मित्र अपने मित्र को कुमार्ग से हटा कर सन्मार्ग की तरफ ले जाता है। जब-जब मनुष्य को निराशा घेरती है और वह कर्तव्य विमुख होने लगता है तब-तब एक आदर्श मित्र उसे कल्याणकारी उपदेश देता है। यहाँ पर हम महाभारत के उस प्रसंग को याद कर सकते हैं जब रणक्षेत्र में अर्जुन कि श्रीकृष्ण और अर्जुन अभिन्न मित्र थे।

मित्रता जीवन निर्माण का एक बहुत ही महत्वपूर्ण अंग होता है अतः मित्र बनाते समय हमें अपने विवेक और बुद्धि से काम लेना चाहिए। जो लोग ऊपरी व्यक्तित्व से प्रभावित होकर बिना सोच-विचार किये मित्र बनाते हैं, वे जीवन में लाभ के बजाय हानि उठाते हैं।

सर्वप्रथम एक अच्छे मित्र में मित्रवत् व्यवहार का गुण होना चाहिए। एक अच्छे मित्रको धैर्यवान होना चाहिए। उसे एक अच्छा श्रोता तथा अच्छा वक्ता होना चाहिए ताकि वह अपने मित्र की समस्याओं को धैर्य से सुने और उनका समाधान कर सके। एक अच्छे मित्र में जीवेतता होनी चाहिए और उसमें हास्यप्रियता का गुण होना चाहिए। इसके अतिरिक्त उसे सत्यवादी, ईमानदार और निःस्वार्थी होना चाहिए।

एक आदर्श मित्र विपत्ति और संकट में अपने मित्र की सहायता करने को सदैव तत्पर रहता है। जिस प्रकार श्रीकृष्ण ने सुदामा की संकट में सहायता की थी, वैसी आदर्श मित्रता का उदाहरण किसी अन्य देश में नहीं मिलता है।

आज व्यक्ति का मुख्य ध्येय धनोपार्जन करना और भौतिक विलास के साधन जुटाना मात्र रहा गया है, तो ऐसे युग में जिस व्यक्ति का एक ही सच्चा मित्र है, वह व्यक्ति सही अर्थों में भाग्यशाली है। हमारी प्रतिष्ठा इस बात में नहीं है कि हमारे कितने मित्र हैं अथवा हमारे मित्रों की संख्या कितनी अधिक है, बल्कि इस बात में है कि हमारे जो भी मित्र हैं, वे किस आचरण के हैं और आदर्श मित्र की कसौटी पर खरे उतरते हैं या नहीं। अतः इस प्रकार हम कह सकते हैं कि एक सच्चा और विश्वासपात्र मित्र जीवन की औषधि के समान होता है।

2)

“भारतीय संस्कृति में अतिथि का स्वरूप”

हिन्दुस्तान एक ऐसा देश है जिसमें एक नहीं अनेकों विशेषताएँ हैं ! फिर चाहे वो अपनत्व की भावना हो, या रिश्तों का मान-सम्मान हो, सब कुछ अपने आप में विशाल है ! इन सब के अलावा एक और परम्परा हमारे देश में जो युगों-युगों से चली आ रही है, और आज भी चल रही है ! वह परम्परा है “ अतिथि देवो भवः” की !

भारतीय संस्कृति में अतिथि को देवता के समान माना जाता है। ‘अतिथि’ का शाब्दिक अर्थ है, जिसके आने की कोई निश्चित तिथि न हो। कालान्तर में ‘अतिथि’ शब्द हमारे घर आनेवाले मेहमान के अर्थ में रूढ़ हो गया। अब हम मेहमान को अतिथि कहते हैं। हमारे घर जब भी कोई मेहमान आता है तो हम उसकी सेवा में

[15]

कोई अभाव नहीं रखते । गृहस्वामी उसका जल, आसन, भोजन आदि प्रदान कर उसका सम्मान करते हैं । उनके लिए घर में अच्छे-अच्छे व्यंजन तैयार करते हैं, उन्हें अपने साथ दर्शनीय स्थलों का भ्रमण कराते है ।

समयानुसार, आज परिस्थितियाँ कुछ बदल चुकी हैं । आज लोगों के पास समय का अभाव है, इसलिए आनेवाले व्यक्ति को भी आने से पहले दूरभाष द्वारा अपने आने की सूचना देनी चाहिए । जिससे मेज़बान स्वयं को मानसिक रूप से तैयार कर ले । यदि वह नौकरी करता है, तो उस दिन के लिए अवकाश स्वीकृत करा लेगा । जहाँ पति-पत्नी दोनों ही नौकरी करते हैं वहाँ तो यह अत्यन्त आवश्यक है कि आने वाला उनकी परेशानी का कारण ना बने । दूसरे, आज की परिस्थितियों को देखते हुए मेहमान को अधिक समय तक नहीं ठहरना चाहिए क्योंकि जिनके घर वह आया हुआ है, हो सकता है उसके कारण उन पर कार्य का भार अधिक बढ़ जाय, जिसके कारण वे परेशानी महसूस करें ।

अतिथि यदि स्वयं विवेक और सहयोग से कार्य ले, तो वह कभी बोझ नहीं बन सकता, इसमें कोई सन्देह नहीं है । यदि गृहस्वामी आर्थिक रूप से कमजोर है तो मेहमान के आने पर उसके घर का बजट गड़बड़ा जाता है । ऐसे समय पर मेहमान स्वयं ही यदि फल, सब्जियाँ आदि उपहार के रूप में लाये तो गृहस्वामी अतिरिक्त भार से बच सकते हैं । यदि पति-पत्नी दोनों नौकरी करते हैं और मेहमान को रुकना आवश्यक है तो वह उन्हें अवकाश लेने के लिए विविध न करे अपितु गृहकार्य में उनका सहयोग करे तो इससे उन्हें खुशी होगी । साथ ही मेहमान को चाहिए कि वह उनसे अनावश्यक खर्च न कराये तथा सामान्य पारिवारिक सदस्य की तरह ही रहे ।

अन्त में हम कह सकते हैं कि हमारे देश में ‘अतिथि देवो भवः’ की भावना अभी भी वैसी ही है जैसी प्राचीनकाल में थी किन्तु अतिथि भी यदि आने वाले के घर की परिस्थितियों को समझकर अपनेपन की भावना रखे तो मेज़बान यह कभी नहीं सोचेगा “ अतिथि तुम कब जाओगे ?” बल्कि द्वार पर उन्हें विदा करते समय यही पूछेगा ‘अतिथि, फिर तुम कब आओगे हम तुम्हारी प्रतीक्षा करेंगे ।

[15]

3)

“स्वच्छता की आवश्यकता”

स्वच्छता से मनुष्य का तन मन स्वस्थ रहता है और वातावरण अच्छा और स्वस्थप्रद । स्वच्छता को प्राचीनकाल से ही बहुत अधिक महत्त्व प्रदान किया गया है । शौच ’ अर्थात् स्वच्छता । स्वच्छता आन्तरिक और बाह्य दो प्रकार की होती है- आन्तरिक स्वच्छता अर्थात् अपने मन को ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध, राग, मोह आदि विकारों से मुक्त रखना और बाह्य स्वच्छता है अपने शरीर को स्वच्छ रखना तथा अपने आसपास के वातावरण को स्वच्छ और शुद्ध रखना । मन को स्वच्छ करके हम अच्छे आचरण अपनाते हैं और अपने शरीर तथा वातावरण को स्वच्छ करके हम अच्छा स्वास्थ्य प्राप्त कर सकते हैं ।

अभी विगत २ अक्टूबर गाँधी जयन्ती को वर्तमान प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी ने ‘स्वच्छ भारत अभियान’ के रूप में मनाने की घोषणा की । स्वास्थ्यप्रद शुरुआत के सन्दर्भ में नदियों की सफाई का अभियान भी चलाया गया । हम सभी का कर्तव्य है कि हम सब ‘स्वच्छ भारत अभियान’ का हिस्सा बने और संकल्प करें कि हम अपने देश को साफ-सुथरा रखेंगे । जब प्रत्येक व्यक्ति स्वच्छता के लिए एकजुट हो जायेगा तो स्वच्छ भारत का स्वप्न साकार हो जायेगा । स्वच्छता अभियान में सहयोग देने के लिए मैंने अपने सहपाठियों से बात की और हमने तीन कार्यों को करने का संकल्प लिया जो इस प्रकार हैं-

- i) **स्वच्छता की शुरुआत अपने घर से-** उठते ही अपना बिस्तर ठीक करना, कमरा साफ करन। अपने सभी सामान को तरीके से लगाना और घर में किसी को भी गन्दगी फैलाने से रोकना, पॉलीथिन का प्रयोग न करना और न करने देना, कूड़ा कूड़ेदान में डालना आदि ।
- ii) **कक्षा-कक्षा में-** हम कभी भी कक्षा-कक्ष को गन्दा नहीं करेंगे । कागज, पेंसिल की छीलन, रैपर आदि सब कूड़ेदान में डालेंगे । कक्षा-कक्ष के एक कोने में कूड़ेदान रखा रहेगा । कोई भी छात्र कक्षा को गन्दा न करे, इस बात का हम सब मिलकर ध्यान रखेंगे ।

	<p>iii) अपने आस-पड़ोस की स्वच्छता- प्रायः देखा जाता है, लोग कूड़ा सड़कों पर डाल देते हैं जिसे कुत्ते या अन्य जानवर फैलाकर और गन्दगी फैलाते रहते हैं इसके लिए हम ध्यान रखेंगे कि कोई भी पड़ोसी अपने घर का कूड़ा बाहर न डाले, कोई सड़क पर थूके नहीं और अपने घर के पास पेड़-पौधे आदि लगाकर पर्यावरण शुद्ध रखे। इसके साथ ही लोगों को हम स्वच्छता के प्रति जागरूक करना चाहेंगे। वास्तविकता यह है कि लोगों को हम स्वच्छता के महत्व को जानते हैं, किन्तु आलस्यवश इसको नजरंदाज करते हैं। जिसका परिणाम होता है; गन्दगी, बीमारियाँ, प्रदूषण आदि। अतः हमे स्वच्छता के महत्व को समझते हुए स्वच्छता के प्रति जागरूक रहना चाहिए तथा अपने घर, विद्यालय और देश को स्वच्छ रखने का संकल्प लेना चाहिए।</p>	[15]
<p>4)</p>	<p style="text-align: center;">“मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।”</p> <p>किसी देश में अमरसेन नाम का एक राजा था। वह बहुत वीर और प्रजा का हित पाहने वाला था। उसकी प्रजा भी उसी बहुत चाहती थी। एक बार किसी बात से नाराज़ होकर उसके पड़ोसी राजा ने उस पर आक्रमण कर दिया। राजा अमरसेन अपनी सेना के साथ बहुत वीरता से लड़ा परंतु भाग्य ने उसका साथ न दिया। युद्ध में उसकी पराजय हुई। उसके बहुत से सैनिक मारे गए। शत्रु के सैनिक उसे जीवित पकड़ना चाहते थे, पर उस किसी तरह युद्धभूमि से बचकर वहाँ से भाग निकला। शत्रु से बचता - बचता वह एक जंगल में जा पहुँचा। वह छिपकर एक गुफा में रहने लगा। गुफा में रहते - रहते उसे अपने परिवार व देश की बहुत याद आती थी। वह किसी तरह अपना खोया राज्य पुनः पाना चाहता था, परंतु उसे कोई उपाय सूझ नहीं रहा था। वह मन हारकर बैठ गया। एक दिन वह गुफा में बैठा कुछ सोच रहा था, तभी उसकी दृष्टि एक मकड़ी पर पड़ी। वह दीवार पर चढ़ने का प्रयास कर रही थी। राजा ने देखा मकड़ी ऊँचाई पर चढ़ती और फिसलकर नीचे गिर पड़ती। मकड़ी ने अनेक बार प्रयत्न किए। हर बार मकड़ी जब नीचे गिर जाती तो अमरसेना को उस पर दया आ जाती। वह सोचने लगा कि बहुत हो चुका अब शायद मकड़ी की हिम्मत ने जवाब दे दिया है। अब वह दीवार पर चढ़ने की कोशिश नहीं करेगी। पर वह यह देखकर हैरान रह गया कि मकड़ी ने फिर से हिम्मत जुटाई और इस बार दीवार पर चढ़ने में सफल हो गई। यह देखकर अमरसेन को सुखद आश्चर्य हुआ। इस घटना ने उस पर गहरा प्रभाव डाला। उसका खोया हुआ विश्वास फिर से जाग उठा। उसने सोचा, जब एक मकड़ी बार - बार गिरने पर भी कोशिश कर दीवार पर चढ़ सकती है, तो भला मैं अपने शत्रुओं को क्यों नहीं हरा सकता। राजा अमरसेन की आँखों में आशा की चमक आ गई। उसने नए जोश एवं साहस के साथ अपनी सेना तैयार की और शत्रु पर धावा बोल दिया। शत्रु अचानक हुए इस हमले के लिए तैयार नहीं था। शत्रु की हार हुई अमरसेन को अपना राज्य फिर से मिल गया। किसी ने ठीक कहा है, “मन के हारे हार है मन के जीते जीत।”</p>	[15]
<p>5)</p>	<p>प्रस्तुत चित्र में कूछ छात्राएं प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के ‘स्वच्छता अभियान’ को साकार रूप प्रदान कर रही हैं। इस बार 2 अक्टूबर, गाँधी जयन्ती को ‘स्वच्छता दिवस’ के रूप में मनाया गया। इस दिन स्कूल के छात्र छात्राओं ने ‘स्वच्छ भारत’ का सपना साकार करने के लिए अपने हाथों में झाड़ू ली। वे सड़क पर आए और अपनी-अपनी झाड़ूओं से सड़क की सफाई करने लगे। सभी छात्र-छात्राओं ने सिर पर टोपी पहनी हुई थी। उनमें से कोई झाड़ू लगा रहा था तो कोई कचरे को उठाकर बोरी में भर रहा था। सभी में एक अपूर्व जोश था। स्वयं सफाई करने में उन्हें आत्मसन्तोष का अनुभव हो रहा था।</p>	

<p>A.2</p> <p>1)</p> <p>2)</p>	<p>वस्तुतः अपने आस-पास सफाई रखन बहुत अच्छी बात है । हमें प्रारम्भ से ही सफाई की आदत डालनी चाहिए । इसकी शुरुआत तभी से हो सकती है जब बच्चा नर्सरी कक्षा में पढ़ता है । उसे अपनी पुस्तक, पेन्सिल, स्कूल बैग आदि उचित स्थान पर रखने के लिए सीख दी जानी चाहिए । फर्श पर इधर-उधर कूड़ा बिखेरने से रोकना चाहिए, इसलिए कमरे के एक कोने में कूड़ेदान रख दिया जाना चाहिए । इसी प्रकार से अपनी कक्षा में भी स्वच्छता का ध्यान रखना बहुत आवश्यक है । अपने शरीर की स्वच्छता के प्रति हमें लापरवाह नहीं होना चाहिए इसलिए प्रातः स्नान करना तथा स्वच्छ और धुले हुए कपड़े पहनना आवश्यक हैं । बाल उचित तरह से काढ़े हुए होने चाहिए तथा नाखून भी समय-समय पर काटते रहना चाहिए । अपने शरीर की और अपने आस-पास की स्वच्छता रखने से हम स्वस्थ रहते हैं तथा रोग के कीटाणुओं को पनपने का अवसर नहीं मिलता ।</p> <p>जब हम अभी मिलकर स्वच्छता पर ध्यान देंगे तो स्वच्छ भारत और स्वस्थ भारत का सपना साकार होने में देर नहीं लगेगी । इसलिए हम सबको स्वच्छता रखने का संकल्प लेना चाहिए ।</p> <p>विषय : असामाजिक तत्त्वों की गुंडागर्दी ।</p> <p>मान्यवर महोदय</p> <p>इस पत्र के द्वारा मैं आपका ध्यान अपनी कॉलोनी-गांधी नगर में कुछ असामाजिक तत्त्वों के बस जाने तथा उनके कारण यहाँ के निवासियों को होने वाली कठिनाइयों की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ ।</p> <p>श्रीमन, हमारी कॉलोनी में पिछले कुछ महीनों से कुछ असामाजिक तत्व आकर बस गए हैं जिनके कारण निवासियों का जीवन दूभर हो गया है । कॉलोनी में अपराध बढ़ गए हैं, आए दिन चोरियाँ होने लगी हैं । तथा महिलाओं का जीवन असुरक्षित हो गया है । कॉलोनी में कुछ अनधिकृत मकान बनाए गए हैं, जिनमें इन तत्त्वों का बसेरा है इन तत्त्वों का इतना खौफ़ है कि कोई इनसे टक्कर लेने की हिम्मत नहीं करता । कॉलोनी में जुए के अड्डे तथा शराब पीने के ठिकाने बन गए हैं ।</p> <p>यद्यपि इन तत्त्वों के खिलाफ कॉलोनी के निवासियों ने स्थानीय पुलिस अधिकारियों तक कई बार अपनी शिकायत पहुँचाई तथापि अब तक इनकी गतिविधियों पर रोक नहीं पाई है तथा न ही इनकी धरपकड़ हुई है ।</p> <p>कॉलोनी के निवासियों की ओर से आपसे प्रार्थना है कि आप कॉलोनी में शांति, सुव्यवस्था अनाए रखने के लिए स्थानीय पुलिस अधिकारियों को कड़ी कार्यवाही करने का निर्देश दें तथा समय - समय पर इस संबंध में उनसे पूछताछ भी करते रहें ।</p> <p>धन्यवाद, भवदीय (हरगोपाल खुराना) अध्यक्ष, गांधी नगर कॉलोनी लुधियाना ।</p>	<p>[15]</p> <p>[7]</p>
	<p>परीक्षा भवन, भिवानी । 20 मार्च, 20... प्रिय अनुज महिपत, स्नेहाशीष ।</p>	

	<p>कल ही डलहौजी से सुकेत के पिता जी लौटे और उनके माध्यम से तुम्हारा हालचाल ज्ञात हुआ । उन्होंने बताया कि तुम्हारा अध्ययन तो सर्वोत्तम है, परंतु तुम किसी भी प्रकार के खेलकूद में भाग नहीं लेते । सदैव स्वयं को छात्रवास के कमरे और अध्यापन कक्ष तक ही सीमित समझते हो ।</p> <p>प्रिय भाई ! मुझे यह जानकर वास्तव में गहरा आघात लगा । तुम नहीं जानते कि खेलकूद में भाग लेना कितना आवश्यक है । स्वयं को पुस्तकों तक ही सीमित कर लेने की प्रवृत्ति अत्यंत घातक है । इससे तो तुम किताबी कीड़ा बनकर रह जाओगे । मेरा तुम्हें गंभीर व सच्चा सुझाव यही है कि तुम प्रायः काल जल्दी उठा करो और अन्य बच्चों के साथ क्रीडाक्षेत्र में चले जाया करो । सुकेत भी तो तुम्हारे ही छात्रावास में है, केवल कक्षा अलग है । तुम उसे साथी बना लो क्योंकि वह प्रतिदिन क्रीडाक्षेत्र में जाकर खेलकूद में भाग लेता है ।</p> <p>मेरे भाई, तुम पहले छोटे-मोटे खेलकूद में भाग लेना आरंभ करो । लंबी सैर भी उपयोगी होती है । खेलकूद छात्रावस्था का अनिवार्य अंग माना गया है । इससे शरीर स्वस्थ रहता है और भरपूर स्फूर्ति मिलती है । शरीर की मांसपेशियाँ सबल होती हैं । भोजन ठीक से पचने लगता है । तुम्हारे लिए तो और भी लाभदायक होगा, क्योंकि तुम प्रायः शिकायत करते हो कि तुम्हें भूख नहीं लगती और खाया-पिया जल्दी नहीं पचता । खेलकूद से भाईचारा, सहनशीलता, धैर्य, संतोष जैसे गुण पनपते हैं और प्रतियोगिता की भावना पल्लवित होती है । तुम्हारा विद्यालय तो इतना उच्चकोटि का है कि उसमें खेलकूद की सारी आधुनिक सुविधाएँ उपलब्ध हैं । किसी वस्तु की आवश्यकता हो तो लिखना । छुट्टियों में लेने आऊँगा । शुभकामना !</p> <p>तुम्हारा अग्रज, क.ख.ग.</p>	<p>[7]</p>
<p>A.3</p>	<p>i) कौशल देश के राजा वृद्ध हो चुके थे इसलिए उन्हें यह चिन्ता थी कि वे अपने राज्य का उत्तराधिकारी अपने चारों पुत्र में से किसको बनाएँ ? कुछ सोच-विचार करने के बाद उन्होंने अपने चारों पुत्रों को बुलाया और कहा कि तुम चारों में से जो भी सबसे बड़े धर्मात्मा को मेरे पास लेकर आएगा, राज्य का उत्तराधिकारी उसी को बनाया जायेगा ।</p>	<p>[2]</p>
	<p>ii) बड़े पुत्र की दृष्टि में एक महाजन सबसे बड़े धर्मात्मा थे । उसका कारण था कि वह लाखों रुपए का दान कर चुके थे, बहुत से मन्दिर और धर्मशालाएँ बनवा चुके थे और भोजन भी वह तभी करते थे जब पहले बहुत से साधु सन्तों और ब्राह्मणों को भोजन करवा देते थे ।</p>	<p>[2]</p>
	<p>iii) साधु तीसरे पुत्र के साथ आया था । उसने परिचय इस प्रकार दिया कि ये साधु महाराज सप्ताह में केवल एक बार दूध पीकर ही रहते हैं और भयानक सर्दी में भी ये जल में खड़े रहते हैं तथा गर्मियों में पंचाग्नि जलाकर तप करते हैं अतः यही सबसे बड़ी धर्मात्मा हैं ।</p>	<p>[2]</p>
	<p>iv) किसान को राजा के सामने उसका सबसे छोटा पुत्र लेकर आया था क्योंकि उसने उसे एक कुत्ते के घावों को साफ करते हुए देखा था । राजा ने उस किसान को ही सबसे बड़ा धर्मात्मा घोषित किया क्योंकि उनके अनुसार बिना किसी स्वार्थ के दीन दुःखियों की ओर कष्ट में पड़े हुए प्राणियों की सेवा करना सबसे बड़ा धर्म है अतः यह किसान ही सबसे बड़ा धर्मात्मा है ।</p>	<p>[2]</p>
	<p>v) प्रस्तुत गद्यांश से हमें यह शिक्षा मिलती है कि जब हम पूण्य लाभ के लिए जप-तप, दान-धर्म आदि करते हैं तो उसमें हमारा स्वार्थ होता है किन्तु बिना किसी स्वार्थ के निर्बल, दीन दुःखियों की सहायता करना ही सबसे बड़ा धर्म है अतः हमें निःस्वार्थ भाव से उनकी सहायता करनी चाहिए ।</p>	<p>[2]</p>

A.4		
i)	(a) पूजा - पूज्य	[½]
	(b) धर्म - धार्मिक	[½]
ii)	(a) राजा - नृप, नरेश	[1]
	(b) जलाशय - तालाब, सरोवर	[1]
iii)	(a) निर्माण × विनाश	[½]
	(b) क्रोध × दया या क्षमा	[½]
	(c) देहाती × शहरी	[½]
	(d) मूर्खता × बुद्धिमानी	[½]
v)	(a) साधु - साधुता	[½]
	(b) तपस्वी - तपस्या	[½]
vi)	(a) कान का कच्चा वाक्य - किसी की बात का ध्यान से न सुनना । - मोहन हमेशा ही कान का कच्चा रहा है । सही बात तो उसे कभी समझ में ही नहीं आती है ।	[1]
	(b) श्री गणेश करना वाक्य - शुरूआत करना - दो महीने बाद मेरी परीक्षाएँ हैं । अभी तक मैंने पढ़ाई का श्रीगणेश नहीं किया है ।	[1]
vii)	(a) कश्मीर में अनेक दर्शनीय पर्यटक स्थल हैं । या कश्मीर में अनेक पर्यटक स्थल देखन योग्य हैं ।	[1]
	(b) मैंने कलम से लिखा था ।	[1]
	(c) आप सपरिवार हमारे घर आइएगा ।	[1]

